परदेशी ! मत भूल्या आपन गांव रे...!!!

पवन कुमार पाण्डेय
एम. ए. (साहित्य), एम. ए. (लोक प्रशासन) & एम. ए. (ज्योतिष),
अनुभाग अधिकारी श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) नई दिल्ली

जहां कभी उस पावन गांव में बहती शुद्ध हवाएं;
दादा-दादी, अम्मा-बाबू की प्रिय स्मृति रेखाएं।
चाचा-ताऊ का निश्छल प्यार भी याद हमेशा आए;
कोशिश चाहे जितनी कर लो फिर भी याद न जाए।।
परदेशी...।।1।।

बाबू-अम्मा के चरण कमल वो याद हमेशा आए;
वरद हस्त उनका जीवन में हर पल रंग जमाए।
गांव की मिट्टी की खुशबू में एक प्यारा अहसास;
याद हमेशा रखना प्रियवर! जब तक तन में सांस।।
परदेशी...।।2।।

धोबीभार, पिपरी स्कूल की यादें कभी न जाए;
पढ़ना-लिखना खेलना दिल से कभी न जाए।
विधि का करतब बड़ा अनोखा क्या-क्या गज़ब दिखाए;
बचपन के सपने औ यादें हर पल गले लगाएं।। परदेशी...3।।

गली, मुहल्ले, पेड़, जानवर, खेत और खलिहान;
याद मुझे ये हरदम आते इनमें बसती जान।
'करमोली' है बड़ा ही प्यारा पास अयोध्या धाम।
निर्मल नदी सारयू बहती; हर दिल रहते राम।।परदेशी...4।।

बड़े- बुजुर्गों की यादें उनके पावन संदेश;
याद हमेशा मुझको आएं काटें कठिन कलेश।
उनकी पावन दुआ हमेशा लेती मेरी बलैया;
'पवन पाण्डेय' वापस आना मेरे बाबू-भैया।। परदेशी...5।।